ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 28 जून 2026 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 28 जून 2026 से 04 जुलाई 2026

ज्येष्ठ शु. 14 • वि० सं०-2082 • वर्ष 67, अंक 26, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 • सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 • पृ.सं. 1-12 • मूल्य - 5/- रु. • वार्षिक शु. 300/- रु.

डी.ए.वी. से.-6, सीडीए, कटक, ओडिशा में सामूहिक योग कार्यक्रम योग दिवस

12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर डीएवी, सीडीए ने अपने परिसर में बड़े उत्साह के साथ एक सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया। यह दिन शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन को प्रोत्साहित करने वाला रहा। कार्यक्रम की शुरुआत शांत वातावरण में प्रार्थना और ध्यान के साथ की गई। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती नमिता महांती ने इस अवसर पर ओडिशा राज्य के पतंजलि योग गुरुओं एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर लगभग एक हजार बच्चे, 211 अध्यापक–अध्यापिका, स्कूल कर्मचारियों एवं 157 अभिभावकों ने भाग लिया एवं योग और प्राणायाम से लाभान्वित हुए। योग और प्राणायाम के साथ–साथ उन्होंने यह भी बताया कि योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है।

इस अवसर पर रत्न डॉ. पूनम सूरी जी का संदेश सुनाया गया जिसमें योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया गया।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती महांती ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य न केवल बच्चों को योग के महत्व से अवगत कराना था, बल्कि उन्हें मानसिक शांति, अनुशासन और स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर करना भी था। उन्होंने सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों को प्रधानाचार्या द्वारा दैनिक जीवन में योग करने की शपथ दिलायी। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ से हुआ।

डी.ए.वी. वेलचेरी, चेन्नई में विश्व पर्यावरण दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेलचेरी, चेन्नई में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अनेक सार्थक एवं प्रभावशाली गतिविधियों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यार्थियों द्वारा आकर्षक एवं विचारोत्तेजक पोस्टरों के निर्माण से हुआ। इन पोस्टरों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया।

विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया। पुष्पीय, औषधीय तथा फलदार पौधों ने विद्यालय परिसर की हरियाली और सौंदर्य को बढ़ाया। क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती मीनू अग्रवाल और प्रधानाचार्या श्रीमती सुजाता एम. ने भी विद्यार्थियों के साथ पौधारोपण कर उन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित किया।

एक पर्यावरण जागरूकता रैली निकाली गई। इस रैली में विद्यार्थियों ने

आकर्षक तख्तियों एवं प्रेरणादायक नारों के माध्यम से वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन–जन तक पहुँचाया। हरित संपदा बढ़ाने हेतु पौधों का दान भी किया। उत्साह, जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण यह आयोजन सभी को पर्यावरण संरक्षण का स्थायी संदेश दे गया।

एम.आर.ए. डी.ए.वी. सोलन में हुआ योगाभ्यास

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सोलन के प्रांगण में 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों सहित गैर–शिक्षक कर्मचारियों ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चारण और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। मंत्रोच्चारण और दीप प्रज्वलन के बाद, अनुभवी योग प्रशिक्षकों के कुशल निर्देशन में योग सत्र का आरंभ हुआ। योग सत्र के दौरान ध्यान, ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन, अनुलोम–विलोम, कपालभाति जैसे प्राणायामों ने सभी को एक असीम शांति और आत्मिक ऊर्जा का अहसास कराया।

प्राचार्या श्रीमती मासूमा सिंघा ने कहा कि योग केवल शरीर को मोड़ने या कसरत करने का नाम नहीं है अपितु यह मन, शरीर और आत्मा को एक सूत्र में पिरोने वाली एक संपूर्ण जीवन–पद्धति है। आज के दौर में योग एक ढाल की तरह काम करता है। योग करने से न केवल तन निरोगी रहता है, बल्कि मन भी शान्त और एकाग्र होता है।

प्राचार्या ने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि योग पर पूरे देश को गर्व है। योग विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ाता है और उन्हें मानसिक व नैतिक रूप से मजबूत बनाता है। हमें योग को जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

जो जीवों को देने योग्य पदार्थों का दाता और ग्रहण करने योग्यों का ग्राहक है, इससे उस ईश्वर का नाम **'होता'** है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 28 जून 2026 से 04 जुलाई 2026

निर्भय बनूँ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ९.६४.२१

ऋषिः **मैत्रावरूणिः वसिष्ठः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (**यत्**) जो, (**अन्ति**) समीप, (**यत् च**) और जो, (**दूरके**) दूर, (**इह**) यहाँ, (**मां**) मुझे, (**भय**) भय, (**विन्दति**) प्राप्त करता है, (**पवमान**) हे सर्वत्र–संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, (**तत्**) उसे, (**वि जहि**) विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म–विश्वास और प्रभु–विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी–संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना–ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपस्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय–कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या–वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म–संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र–संचारी, सर्वव्यापी और अन्तःकरण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय–दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● **महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती**

'आर्यजगत्' के इस स्तम्भ के अन्तर्गत महात्मा आनन्द स्वामी जी के प्रवचनों और उनके उदात्त लेखन के आधार पर प्रकाशित पुस्तकों को धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाता रहा है। पाठकों द्वारा इस आनन्द के अमृत का मधुर रसास्वादन किया गया है, ऐसा उनकी प्रतिक्रियाओं ने प्रमाणित किया है।

स्वामी जी द्वारा आर्य समाज करोल बाग, दिल्ली में एक कथा की थी, जिसका शीर्षक था **'एक ही रास्ता'**। स्वामी जी की यह कथा एक अमृत की नदी की तरह पाठकों के हृदय को सिंचित करती हुई उन्हें आनन्द में विभोर कर देती है।

पाठकों के आग्रह पर इस अंक से इस कथा को धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। करोल बाग में हुई इस कथा को स्वामी जी के यशस्वी पुत्र श्री रणवीर जी ने लेखनीबद्ध कर मिलाप कार्यालय, नई दिल्ली से संवत 2013 में प्रकाशित किया था।

जीवन जीने के इस एक मात्र की कथा सुधी पाठकों को अच्छी लगे और उनका मार्ग प्रशस्त करे ऐसी परमपिता से प्रार्थना है।

–सम्पादक

पहला दिन

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो
त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।।

सामवेद उ. 4.2.13.2

मेरी प्यारी माताओ और सज्जनो !

जैसा कि आपको अभी बताया गया है, जिस विषय के सम्बन्ध में मुझे कथा करनी है वह है **'एक ही रास्ता'**। प्रातःकाल मैंने जब समाचारपत्रों को देखा और फिर शहर की दीवारों को देखा तो वहाँ कितनी ही जगहों पर लिखा पाया–'एक ही रास्ता'। मैंने समझा–करोलबाग आर्यसमाज ने बहुत रुपया बिना कारण ही खर्च कर दिया। कथा का विषय बताने के लिए इतने बड़े–बड़े विज्ञापन किसलिए दिये ? परन्तु बाद में पता चला कि वह कथा का विज्ञापन नहीं, किसी फिल्म का नाम है 'एक ही रास्ता', इसकी चर्चा उन विज्ञापनों में है। अब एक रास्ता वहाँ है, एक यहाँ। कौन–सा रास्ता ठीक है, वह हमें देखना है। परन्तु वहाँ और यहाँ का अन्तर हो तो हो, रास्ता तो एक ही है, दूसरा नहीं; और यह वह रास्ता है जिसे हमारे देश की सरकार ने अपना आदर्श बनाया, जिसका वर्णन वेद, उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ करते हैं। भारत सरकार का आदर्श है–

सत्यमेव जयते 'सदा सत्य की जय होती है।' और वेद, उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं–

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

शतपथ 14.4.1.30

'असत्य से सत्य की ओर ले चल; अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चल; मृत्यु न दे, अमृत दे हमको।' परन्तु यह मृत्यु, जिससे हम बचना चाहते हैं, क्या है ? प्रत्येक वस्तु जो उत्पन्न होती है, वह अवश्य नष्ट होती है। आपके लिए मृत्यु नहीं है, इसलिए इस मृत्यु का, जिसे हम मृत्यु कहते हैं, इसमें वर्णन नहीं है। मृत्यु का वास्तविक अर्थ है दुःख, कष्ट, क्लेश, बीमारी, गरीबी, भूख, व्यभिचार, दुराचार, अत्याचार, परतन्त्रता, भीरुता, कमज़ोरी, हार, घूस, ब्लैकमार्केट और इस प्रकार की दूसरी सब बातें, और अमृत का अर्थ है वे सभी वस्तुएँ जो अच्छी हैं। भक्त इच्छित वस्तुओं की इच्छा से और बुरी बातों से बचने के लिए प्रार्थना करता है तो कहता है –**"मृत्यु न दे, अमृत दे।"** इसी प्रकार अन्धकार के बदले वह ज्योति माँगता है। अभी हम यहाँ आये तो अँधेरा था। पता लगा कि बिजली का तार जल गया है। सब लोग चिन्ता में थे। तार लग गया,

रोशनी आ गई तो सबके हृदयों में प्रसन्नता आ गई। झूठ अन्धकार भी है, मृत्यु भी। सत्य रोशनी भी है, अमृत भी। इसी की हम इच्छा करते हैं। इस इच्छा के पूरे होने का एक ही रास्ता है। इस रास्ते को मुझे आपके सामने रखना है। आनेवाले सात दिनों में आप बार–बार इस 'एक ही रास्ता' का वर्णन सुनोगे।

संसार आज विनाश की ओर जा रहा है। एक से एक बढ़कर ऐसे हथियार बनते हैं जो अधिक–से–अधिक विनाश कर दें। चिल्लाते हुए लोग दौड़े जाते हैं– 'बचाओ–बचाओ !' दुनिया का प्रत्येक दार्शनिक, विचारक, राजनीतिज्ञ, विद्वान् और नेता इस चिन्ता में है कि संसार को विनाश से कैसे बचाया जाये ? प्रत्येक शासन, प्रत्येक शक्ति कहती है–शान्ति चाहिए।

मन–ही–मन में चाहे वह और योजनाएँ बनाता हो, बाहर से प्रत्येक व्यक्ति शान्ति की बात करता है, विनाश से बचने की चिन्ता व्यक्त करता है। इनके बाहर कुछ और है, अन्दर कुछ और। इसलिए विनाश से बचने की जितनी बात ये करते हैं, विनाश का अन्धकार उतना ही समीप आता जाता है। इनके अन्दर स्पष्ट नहीं है, इसलिए अमृत नहीं है, ज्योति नहीं है। वेद भगवान् सत्य कहते हैं–

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

'जो आत्मा को देनेवाला, बल को देनेवाला परम सत्य है, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी उपासना करना ही सबसे बड़ा काम है' उसीसे दुनिया परे हट गई है। अविश्वास की अग्नि जल उठी है, ज्वालाएँ धधक रही हैं। कुछ पता नहीं कि इस धधकते हुए, उबलते हुए, उछलते हुए अग्नि– सागर में सारा संसार कब कूद पड़े। मानवता जल जाये, महानाश जाग उठे। इस दशा को देखकर लोग चिल्ला उठते हैं। जिन्हें ज्योति और अमृत प्रिय है वे चिल्लाकर पूछते हैं–"क्या मानवता को बचाने का कोई उपाय नहीं ? क्या संसार के कल्याण का दिवाला निकल गया ? समाप्त हो गया सब कुछ ? क्या अब कोई आशा नहीं ?"

इस दशा को देखकर मुझे एक पुरानी कथा याद आती है। आयुर्वेद शास्त्र के महान् ग्रन्थ 'चरक' को लिखनेवाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में जा रहे थे। घने जंगल की पगडण्डी पर वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश।

एकदम महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गए। आकाश की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी साँस लेकर बोले–"महानाश आनेवाला है।"

अग्निवेश ने पूछा–"कैसा महानाश, गुरुदेव ?"

पुनर्वसु बोले–"मैं देखता हूँ कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है, वायु, तारे, आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा ! ओषधियाँ अपना प्रभाव छोड़ देंगी ! पृथिवी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे ! विनाश करनेवाली आँधियाँ चलेंगी ! विनाशकारी भूकम्प उठेंगे ! बड़े–बड़े बम गिरेंगे ! महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा ! मनुष्य बचेगा नहीं, बचेगा नहीं !"

यह कथा 'चरक' के विमान स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा–"गुरुदेव ! आप यह भयभीत करनेवाली भविष्यवाणी क्यों कर रहे हैं ? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रन्थ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आएगा तो क्यों ?"

महर्षि पुनर्वसु ने कहा–"इसलिए आएगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेंगे–सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में उनकी रुचि न रहेगी।"

अग्निवेश ने पूछा–"धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव ?"

गुरुदेव बोले–"बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नहीं रहती।"

यह है इस आनेवाले महानाश का कारण। 'चरक' में केवल रोग ही नहीं बताये गये हैं, इनकी चिकित्सा भी बताई गई है। अग्निवेश ने जब यह पूछा कि महानाश के रोग का कारण क्या होगा तो महर्षि पुनर्वसु ने स्पष्ट और सीधे शब्दों में कारण भी बता दिया। रोग को कोई नहीं चाहता, परन्तु कारण उत्पन्न हो जाये तो रोग अवश्य पैदा होता है। क्यों जी करोलबाग में रहनेवालो ! क्या आपमें से कोई चाहता था कि आपको पीलिया की बीमारी हो जाये ? कोई नहीं चाहता था। फिर भी जब कारण पैदा हुआ तो पीलिया जाग उठा। कितने ही घरों में हाहाकार जाग उठा। बुद्धि के बिगड़ जाने से सर्व प्रकार के विनाश उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए चरक ने कहा–

प्रज्ञापराधो मूलं सर्वरोगाणाम्।

'बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है।' परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते; सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आत्मिक सभी रोग पैदा होते हैं इसलिए कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी कहा–

बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। गीता 2.63

'बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।' महाभारत के उद्योगपर्व में आता है कि जब देवता किसी की रक्षा करना चाहते हैं या किसी का नाश करना चाहते हैं तो क्या करते हैं ? स्पष्ट वर्णन है कि जब वे नष्ट करना चाहते हैं तो उसके लिए विष नहीं भेजते, तलवारें नहीं बनाते, किसी को यह नहीं कहते कि जाकर अमुक व्यक्ति को नष्ट कर आओ। केवल एक बात करते हैं और वह यह कि उसकी बुद्धि बिगाड़ देते हैं। तब वह स्वयं ही ऐसे रास्ते पर चल पड़ता है, जो विनाश का रास्ता है; और जब वे किसी की रक्षा करना चाहते हैं, तब उसके लिए अंग–रक्षक नहीं भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाओ, इसकी रक्षा करो, अपितु उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा करते हैं कि वह स्वयं ही रक्षा के मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं ही उसकी रक्षा होती है।

चाणक्य ने भी कहा है–"ऐ भगवान् ! यदि मेरे बुरे कर्मों के कारण मेरा सब कुछ छिन जाये– धन, दौलत, जमीन, परिवार, सुख और सौभाग्य, सबका अन्त हो जाए, मेरे शरीर का एक–एक अङ्ग छीन ले, एक–एक अङ्ग ले ले, केवल एक वस्तु रहने दे मेरे पास, मेरी बुद्धि।"

और वेद भगवान् भी यही कहता है। सामवेद के 101वें मन्त्र में भक्ति का वर्णन किया, फिर कहा है कि भक्ति करते– करते इसके सफल होने पर त्याग अभ्यास के बाद जब भगवान् सामने आ जायें तो उससे क्या माँगें ?

करोलबाग के किसी सज्जन के सामने भगवान् आ जाएँ और कहें– माँग, क्या माँगता है ? तो वह कदाचित् कहे कि मकानों के किराये कम हो जायें, गलियाँ चौड़ी हो जायें। माताएँ शायद कहें कि दुपट्टे सस्ते हो जायें, कॉलिजों और स्कूलों में बच्चों की फीस कम हो जाये। परन्तु सामवेद का यह मन्त्र कहता है–बेकार हैं ये वस्तुएँ। इन्हें माँगने का कोई लाभ नहीं। धन, दौलत, परिवार माँगने का लाभ नहीं। तब क्या माँगो ? मन्त्र पुकारकर कहते हैं–

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा।। सा. 101

'जब ज्योति जाग उठे; अष्टांग योग की सात सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद, सात यात्राओं को पूरा करने के पश्चात्–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान के बाद जब समाधि अवस्था में पहुँच जाओ, तब एक महान् ज्योति प्रकट होती है।' सात सीढ़ियों के बाद वह मनमोहन प्रियतम सामने आकर कहता है–"अरे ! मैं तो प्रकट हो गया, तेरे समक्ष आ गया, माँग क्या माँगता है ? क्या चाहता है तू ? उस समय अपने जीवन को सुधारने के लिए, लोक और परलोक को सुधारने के लिए, उस महाज्योति और महाशक्ति से 'मेधा' को माँगो। मेधा उस बुद्धि को कहते हैं जो भूलती नहीं, जिसमें आई बात फिर कहीं जाती नहीं।

कई लोग इस भूलने के रोग से छुटकारा पाने के लिए ब्राह्मी बूटी का प्रयोग करते हैं कई लोग मकरध्वज खाते हैं कई लोग दूसरी ओषधियाँ प्रयोग करते हैं। एक माँ की बात मुझे याद आती है। मैं उसके घर गया था। बहुत दुःखी थी वह। पूछा–"क्यों दुःखी हैं ?" बोली–"मुझे कुछ भी याद नहीं रहता। बाहर से अन्दर आती हूँ वस्तु लेने के लिए, अन्दर आते–आते यही भूल जाती हूँ कि क्या लेने आई थी।" इस मन्त्र में उसी बुद्धि को माँगने की बात कही गई है जो भूलती नहीं।

क्रमशः

संसार आज विनाश की ओर जा रहा है। एक से एक बढ़कर ऐसे हथियार बनते हैं जो अधिक-से-अधिक विनाश कर दें। चिल्लाते हुए लोग दौड़े जाते हैं– 'बचाओ-बचाओ !' दुनिया का प्रत्येक दार्शनिक, विचारक, राजनीतिज्ञ, विद्वान् और नेता इस चिन्ता में है कि संसार को विनाश से कैसे बचाया जाये ? प्रत्येक शासन, प्रत्येक शक्ति कहती है-शान्ति चाहिए।

समाज की व्यवस्था

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

आज कथा का छठा दिन है। स्वामी जी की कथा बड़ी रोचक और ज्ञानवर्धक होती है। इसलिये लोगों के हृदयों में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई है। वे बड़े ध्यान से सुनते हैं और उस पर मनन करते हैं। आज स्वामी जी समाज की व्यवस्था के बारे में उपदेश देने वाले हैं, जनता में बड़ा उत्साह है। स्वामी जी के साथ सब ने यह भजन गया।

भजन

जाति को जीवन दो भगवान् !
आशा का अंकुर उपजा दो,
परहित का पीयूष पिला दो।
सेवा का सन्मार्ग सुझा दो,
साहस का सोपान।।
जाति को जीवन दो भगवान् !
प्रेम एकता का वर वर दो,
ज्ञान उजाला घर घर कर दो।
कूट कूट हृदयों में भर दो,
'स्वाभिमान.... सम्मान'।।
जाति को जीवन दो भगवान् !
दलितों के अधिकार दिला दो,
बिछुड़ों को फिर गले लगा दो।
भेद–भाव का भूत भगा दो,
हों सब लोग समान।।
जाति को जीवन दो भगवान् !
विधवा दल के संकट टारो,
गोकुल के कुल क्लेश निवारो।
बलहीनों में बल सञ्चारो,
निर्भय करो निदान।।
जाति को जीवन दो भगवान् !
देश–भक्ति की ज्योति जगा दो,
धर्म–धाम का द्वार दिखा दो।
कर्मवीर बनना बतला दो,
कर दयालुता दान।।
जाति को जीवन दो भगवान् !

स्वामी जी – मनुष्य एक सामाजिक जीव है। वह अकेला नहीं रहता। हज़ारों मनुष्य साथ–साथ गाँवों और नगरों में रहते हैं। शेर के समान किसी जंगल की माँद में रहकर उनका गुज़ारा नहीं होता इसलिये समाज का विधान बनाने की जरुरत पड़ती है।

वैदिक ऋषियों ने समाज का एक सुन्दर विधान बनाया था। उस से अच्छा विधान अब तक किसी ने सोच कर नहीं निकाला।

इस विधान का नाम है वर्णाश्रम। वर्ण चार हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

पहले उच्चतम वर्ण का नाम ब्राह्मण है। वे लोग जो अच्छे स्वभाव के और विद्याप्रिय हों उनको यह काम सौंपा गया कि वे दूसरों को पढ़ावें, देश और जाति की ज्ञान–वृद्धि करें। उनको उपदेश करें और ऐसी विचार–तरंगों को देश में उत्पन्न न होने देवें जिनसे जाति या देश का भविष्य ख़तरे में हो जाए। ब्राह्मण वह है जो विद्या पढ़े पढ़ावे, त्यागी तपस्वी हो, ईश्वर का भक्त हो और ईश्वर के सिवाय किसी से न डरे। दूसरे वर्णों का कर्त्तव्य है कि ब्राह्मण को दक्षिणा दें और उसको कष्ट में न रहने देवें परन्तु ब्राह्मण का भी कर्त्तव्य है कि लोभी और लालची न हो।

दूसरा वर्ण है क्षत्रिय। जो बलवान् हैं और दूसरों की रक्षा कर सकते हैं उनका वर्ण है क्षत्रिय। क्षत्रिय का यह नाम इसलिये पड़ा कि वे चोर डाकू और अत्याचारियों को दण्ड देकर क्षति **{क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेपु रूढः। (कालिदास का रघुवंशः सर्ग 2 श्लोक 53)}** अर्थात् कष्ट से लोगों की रक्षा करता है। देश का शासन प्रबन्ध क्षत्रियों के हाथ में दिया जाता है। क्षत्रिय में ये गुण होना चाहिये।

(1) शारीरिक बल हो।
(2) विषयी और लम्पट न हो।
(3) भय न करे।
(4) दूसरों को व्यर्थ भयभीत न करे।
(5) लालची न हो।
(6) रक्षा करने के लिये सदा उद्यत रहे।
(7) गरीबों को न सताये।
(8) देश के नियमों का पालन करे, न अधर्म पर चले, न दूसरों को अधर्म पर चलने दे।

तीसरा वर्ण है वैश्य वर्ण ! वैश्य का कर्त्तव्य है कि सब प्रकार से देश और जाति के धन की संवृद्धि में सहायक हो और पूरा पूरा उद्योग करे। खेती करना, व्यापार, कला, कौशल, अच्छी–अच्छी चीजें बनाना और उनको देश, देशान्तर में पहुँचाना, ये सब वैश्य के काम हैं। लोहार, बढ़ई, सुनार, थवई, इंजीनियर, कुम्हार, जुलाहे, कारीगर, ये सब वैश्य वर्ण के लोग हैं क्योंकि इनसे धन की संवृद्धि होती है।

वैश्यों के लिये सब से बड़ा काम यह है कि देश का कोई भाग भूखों न मरे। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों और संन्यासियों को दान द्वारा खाना पहुँचाया जाए। अन्य गृहस्थों को व्यापार और क्रय–विक्रय द्वारा खाना पहुँचाया जाये। जिन देशों में खाना कम होता है वहाँ उन देशों से खाना लाया जाये जहाँ खेती अधिक अच्छी होती है। जहाँ अच्छी नहीं हो सकती और लोहे कोयले आदि की खानें हैं वहाँ के लोगों में कला कौशल की उन्नति करना वैश्यों का काम है। मजदूरी करने वाले लोगों की रोजी का प्रबन्ध भी वैश्यों का कर्त्तव्य है। जो निर्धन हैं और थोड़े से धन से व्यापार कर सकते हैं उनको थोड़ी–सी ब्याज पर रुपया देकर व्यापार में लगाना वैश्यों का काम है।

परन्तु वैश्यों को धन कमाने के साथ धन का लोभी नहीं बनना चाहिये। जो धन कमावें उसको व्यसनों में न उड़ावें दूसरों को दान देवें और ऐसा व्यापार न करें जिससे दूसरों की रोजी मारी जाए और वे दरिद्र हो जायें।

चौथा वर्ण 'शूद्र' है। शूद्र वे लोग हैं जो बुद्धि के बहुत मन्द हैं। उनको स्वयं कुछ करने की योग्यता नहीं, वे दूसरों के इशारों पर काम कर सकते हैं। इन का कर्त्तव्य है कि वे ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के कामों में मदद देवें, खोटे कर्म न करें, न किसी को धोखा देवें, अपने शारीरिक परिश्रम से मजदूरी कमावें।

यह हुए चार वर्ण परन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि वर्णों से तात्पर्य हिन्दू जाति की वर्तमान जाति बिरादरियों से है। यह जात बिरादरियाँ वर्ण नहीं है अपितु वर्णों का उलटा है। जात बिरादरियाँ रोटी बेटी का भेद–भाव रखती हैं और जन्म पर निर्भर हैं। आजकल ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही कहलाता है चाहे वह मूर्ख और दुराचारी ही क्यों न हो और चमार का लड़का चमार ही रहता है चाहे वह विद्वान् और धर्मात्मा क्यों न हो। इस जन्म परक जात बिरादरी ने देश में अज्ञान, द्वेष, भेद भाव और मिथ्याभिमान बढ़ा दिया है और हिन्दू जाति असंगठित होकर ह्रास को प्राप्त हो गई है। योग्य प्राचीन ब्राह्मण के कुलों के लड़के नालायक होकर भी ब्राह्मण कहलाते और विद्या वृद्धि में रोड़ा अटकाते हैं। प्राचीन वीर क्षत्रिय वंश की अयोग्य सन्तान क्षत्रिय कहलाते हैं और इनसे किसी की रक्षा नहीं होती। कई वैश्य जातियाँ कुम्हार, जुलाहे, शूद्र गिने जाते हैं और लोग उनको न छूते हैं न उनको पढ़ाकर तरक्की करने देते हैं। इस प्रकार अन्धेर नगरी चौपट राजा हो रहा है।

शिवदत्त – मेरी समझ में आ गया कि वर्ण–व्यवस्था का निर्माण क्यों हुआ था। पर समाज में छूत और अछूत के भाव कैसे उत्पन्न हो गये ?

स्वामी जी – जब जाति का पतन आरम्भ हुआ तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई। समाज का संगठन बिगड़ गया। हर वर्ण वाले अपने को उच्च और दूसरों को नीच समझने लगे। इस प्रकार अनेक जाति उपजातियाँ उत्पन्न हो गईं। समाज को बलिष्ठ बनाने के लिए जो एकता आवश्यक थी वह नष्ट हो गई। वर्ण व्यवस्था भी अब गुण, कर्म, स्वभावानुसार नहीं रह गई थी, वह जन्म के अनुसार मानी जाने लगी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ण वाले शूद्र वर्ण वालों से द्वेष करने लगे। उनको समाज से बाहर निकाल दिया गया, उनकी अलग बस्तियाँ बन गईं, उनके कुएँ अलग बने। हिन्दुओं के मन्दिर में उनको घुसने की आज्ञा न थी। वे वेदों को मानने वाले थे, वैदिक धर्मी थे पर हिन्दू समाज में उनका कोई स्थान नहीं था। इस प्रकार आपस में द्वेष के भाव जगे। एक दूसरे को अलग–अलग समझने लगे। यह अवस्था इतनी बढ़ी कि दक्षिण भारत में अछूत के मुख को देखना भी पाप समझा जाने लगा।

बिचारे अछूतों को यह भी आज्ञा न थी कि वे सड़कों पर निकल सकते।

{केरल के वायक्कुम नगर में इसी भेदभाव को दूर करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐतिहासिक सत्याग्रह किया था। 'जिज्ञासु'}

ज्ञानचन्द्र– इतना अन्याय ? हा दैव !

स्वामी जी–हाँ इन बिचारों के साथ ऐसा अन्याय किया गया। कुत्ते बिल्लियों को गोद में लेना बुरा नहीं समझा जाता था, परन्तु इन अछूतों के साथ पशु से भी बुरा व्यवहार होने लगा। ऋषि दयानन्द ने सब से पहले लोगों को बताया कि ऐसा व्यवहार उचित नहीं। समाज को बलवान् बनाने के लिये उनकी भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी उच्च वर्ण की। फिर वर्ण–व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिये।

रामचन्द्र–धन्य हैं ऋषि दयानन्द। आर्यसमाज ने इस सम्बन्ध में क्या किया ?

स्वामी जी – आर्यसमाज ने उनका प्रवेश आर्यसमाज के मन्दिरों में कराया। इस पर समाज में बड़ी हलचल मची। लोगों ने आर्यों का विरोध किया पर ऋषि के भक्त डटे रहे। अछूतों को यज्ञोपवीत दिये गये, वेदमन्त्र सिखाये गये। उनको शिक्षा देने के लिये अछूतों की पाठशालाएँ खोली गई। अछूतों में नशे की बुरी लत थी, यह आदत छुड़ाने

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गतांक से आगे...

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोज़ी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित् लम्बे लेख से लाभान्वित हों। इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेख की तीसरी किश्त है।

–सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती को समग्ररूप में जानने के साधन

"स्वामी दयानन्द सरस्वती को समग्ररूप से जानने के लिए उनके स्वयं लिखित वा कथित आत्मवृत्तों, अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखे गये जीवनचरितों, उनके द्वारा लिखे गये सम्पूर्ण मुद्रित और अमुद्रित ग्रन्थों, उनके समस्त हस्तलेखों, हस्तलेखों पर मुद्रण के अनन्तर उनके द्वारा लिखी गई टिप्पणियों, पत्रों, विज्ञापनों एवं उनके विभिन्न शास्त्रार्थों तथा प्रवचनों का अत्यन्त गम्भीरता से अध्ययन एवं मनन आवश्यक है।

{इन सब ऐतिहासिक पहलूओं को जानने के लिए 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' (लेखक–पं. युधिष्ठिर मीमांसक) द्रष्टव्य है–प्रथम संस्करण–1949 ई., दयानन्द बलिदान शताब्दी परिवर्धित संस्करण–1983 ई. तथा द्वितीय संस्करण–2018 ई.}

इनके अतिरिक्त गुजराती, मराठी, बंगला आदि प्रान्तीय भाषाओं में उनके समकालीन अनुयायियों, विरोधियों तथा तटस्थ देशी विदेशी व्यक्तियों द्वारा लिखित ग्रन्थों और तात्कालिक पत्र–पत्रिकाओं में उल्लिखित वृत्तान्तों वा घटनाओं का परिज्ञान भी अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखे वा लिखवाये ग्रन्थों में परिस्थिति विशेष के कारणवश स्वयं उनसे तथा उनके सहयोगी पण्डितों के अज्ञान–आलस्य–प्रमाद वा उपेक्षा आदि के कारण जो अशुद्धियाँ हुई है, उनका कारणपूर्वक यथावत् परिज्ञान भी आवश्यक है। अन्यथा किन्हीं विषयों में हम भ्रान्त भी हो सकते हैं।

{(i) ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास (पं. युधिष्ठिर मीमांसक) (ii) मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका कार्य (लेखक–पं. युधिष्ठिर मीमांसक) प्रथम संस्करण–2048 वि.सं. तथा द्वितीय संस्करण 2050 वि.सं.}

मैंने अपने जीवन के लगभग 60 वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती को समझने में लगाये हैं। ऊपर वर्णित ज्ञात सामग्री में से 90 प्रतिशत का मैंने अध्ययन एवं मनन किया है। उनके सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों तथा वेदभाष्यों के कुछ भागों और पत्रों, विज्ञापनों, शास्त्रार्थ एवं पुणे–बम्बई के प्रवचनों का सूक्ष्म दृष्टि से सम्पादन एवं प्रकाशन भी किया है। इसके साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट पठन–पाठन विधि से वेदाङ्ग एवं उपाङ्ग पर्यन्त (एक आध को छोड़ कर) प्राचीन गुरुपरम्परानुसार अध्ययन और चिरकाल तक अध्यापन किया है। अतिविस्तृत वैदिक और लौकिक वाङ्मय की विविध शाखाओं के मुद्रित तथा लिखित सहस्रों ग्रन्थों का यथाशक्ति पारायण एवं अवलोकन किया है। अनेक दुर्लभ ग्रन्थों को भारत के विभिन्न नगरों में स्थित शोधसंस्थानों के हस्तलेखागारों में बैठकर पढ़ा या उनकी प्रतिलिपियाँ की हैं। मैंने अपने विस्तृत अध्ययन और मनन के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती को किस रूप में समझा है, इसे संक्षेप से कहा जाए तो इस प्रकार कहा जा सकता है–

"ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त जितने भी ऋषि मुनि एवं आचार्य हुए, तथा उनके द्वारा जो प्रोक्त वाङ्मय सम्प्रति उपलब्ध है तथा जो वेदानुकूल भारतीय शिष्टाचारान्तर्गत परम्परा है, उन सबको स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने अन्दर समेटे हुए हैं। उनका अपना कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व वा मत नहीं है।"

{मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका कार्य (पं. युधिष्ठिर मीमांसक) पृष्ठ–2–3, प्रथम संस्करण–2048 विक्रम संवत्}

युधिष्ठिर जी का समावर्तन संस्कार

1934 के अन्त तक मीमांसक जी का काशी में रहकर पढ़ने योग्य ग्रन्थों का अध्ययन लगभग पूरा हो गया था। दिसम्बर के अन्त में गुरुजी (पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) काशी से लाहौर लौट आये। लाहौर में **विरजानन्द आश्रम** के साथ **सांग वेद विद्यालय** गुरुजी ने और जोड़ दिया। आश्रम के प्रांगण में 21 अप्रैल 1936 को पं. युधिष्ठिर जी का विधिवत् समावर्तन संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर रामलाल कपूर परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रमुख सज्जन महानुभाव भी उपस्थित थे। सर्वप्रथम 'विरजानन्द आश्रम' के आचार्य पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने 'आश्रम' का इतिहास और पं. युधिष्ठिर जी के व्यक्तिगत गुणों के साथ उनके वैदुष्य की चर्चा करते हुए कहा–इस आश्रम का प्रथम ब्रह्मचारी युधिष्ठिर यथाशक्य वेद–वेदांगों का अभ्यास कर चुका है।

ब. युधिष्ठिर ने विगत 14 वर्षों के काल में विद्याध्ययन का सम्पूर्ण श्रेय अपने आचार्य पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु को दिया तथा यह कहा कि ऋषि ऋण से उऋण होने का शास्त्रीय निर्देश स्वाध्याय और प्रवचन को बतलाया गया है। अतः इस कार्य में मैं आजीवन लगा रहूँगा। पं. भगवददत्त ने युधिष्ठिर जी के व्याकरण–निरुक्त–मीमांसा– वेद और वेदांगों की असाधारण योग्यता का उल्लेख किया। महात्मा हंसराज जी ने स्वामी दयानन्द की आर्ष पाठविधि पर अपनी पूरी श्रद्धा प्रकट की और कहा कि हम लोगों ने अष्टाध्यायी की क्लासें खोली थीं, जिसमें मैं स्वयं पढ़ाता था। तथा पं. गुरुदत्त जी को इतनी धुन थी कि रात के 12.00 बजे तक क्लर्कों को पढ़ाते रहते थे, जिनका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ा। इस अवसर पर उन्होंने युधिष्ठिर जी को बधाई दी, भावी जीवन में भी स्वाध्याय जारी रखने तथा अपने आचार्य के गुणों को भी धारण करने की प्रेरणा दी। साथ ही महात्माजी ने स्वामी दयानन्द की आर्ष पाठविधि को प्रायोगिक रूप से सफल बनाने का श्रेय श्री जिज्ञासु जी को दिया। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुखजनों में स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी (संस्थापक–आर्ष गुरुकुल एटा), डॉ. लक्ष्मण स्वरूप, आचार्य विश्वश्रवाः, प्रिन्सिपल शिवदयालु जी, विरजानन्द आश्रम के प्रथम संचालक लाला गुलजारीमल जी के भी उद्बोधन हुए। **'विरजानन्द आश्रम सांगवेद विद्यालय में समावर्तन संस्कार हुआ'** इस शीर्षक से **'हिन्दी मिलाप'** (लाहौर) ने अपने रविवासरीय अंक में 07 जून 1936 को इस पूरे संस्कार की सारगर्भित और विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसे मीमांसक जी ने अपने **'आत्म–परिचय'** के अष्टम परिशिष्ट में पृष्ठ 137 से 141 तक पूरे 5 पृष्ठों में छापा है।

मैंने अपने जीवन के लगभग 60 वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती को समझने में लगाये हैं। ऊपर वर्णित ज्ञात सामग्री में से 90 प्रतिशत का मैंने अध्ययन एवं मनन किया है। उनके सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों तथा वेदभाष्यों के कुछ भागों और पत्रों, विज्ञापनों, शास्त्रार्थ एवं पुणे-बम्बई के प्रवचनों का सूक्ष्म दृष्टि से सम्पादन एवं प्रकाशन भी किया है।

मीमांसक जी की सारस्वत साधना

मीमांसक जी का रचना संसार परिमाण तथा शास्त्रीय वैशिष्ट्य दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है–

1. माध्यन्दिन संहितायाः पदपाठः

वि.सं. 1471 के विशिष्ट हस्तलेख तथा अन्य विविध मुद्रित वा हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर यजुर्वेद के पदपाठ के आदर्श संस्करण का सम्पादन तथा प्रकाशन– 1971 ई.। राजस्थान सरकार ने इसके लिए तीन वर्ष तक 150/– रु. मासिक सहायता प्रदान की थी। प्रकाशित होने पर उ.प्र. शासन से पुरस्कृत।

2. यजुर्वेद भाष्य संग्रह

ऋषि दयानन्दकृत यजुर्वेद के जो अंश पंजाब की शास्त्री–परीक्षा में स्वीकृत थे उनका सम्पादन–1960 ई.। इसके परिशिष्ट में आधुनिक वैयाकरणों द्वारा अशुद्ध माने गये कतिपय शब्दों का साधुत्व विवेचन भी किया गया है।

टंकारा ट्रस्ट में कार्य करते हुए मीमांसक जी ने गोपथ ब्राह्मण के कुछ

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

गतांक से आगे...

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

● भद्रसेन

'चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु' शीर्षक से छपे विद्वान् लेखक के ट्रैक्ट में युवाओं की स्थिति, 'धर्म' और 'शास्त्र' पर विचार पढ़ने के बाद अब भाषा, जातबिरादरी तथा प्रदेश, ज्योतिष पर चर्चा पढ़ें। -सम्पादक

भाषा

मनुष्य एक सामाजिक विचारशील प्राणी है, सामाजिक व्यवहार और जीवन में अपने भाव एक दूसरे को बताने के लिए भाषा रूपी साधन की ज़रुरत होती है। क्योंकि इशारों की अपेक्षा बोल कर अपने भाव प्रकट करना सरल और स्पष्ट रहता है। व्यक्ति जन्म के समय कोई भाषा साथ लेकर नहीं आता। वह जहाँ रहता है, जिनसे वर्तता है, उनकी भाषा सीख जाता है। ऐसे ही पढ़ाई–लिखाई से भी किसी भाषा में प्रवीणता आ जाती है। भाषा के नियमों से व्यवस्थित, सुनिश्चित, स्पष्ट होने से कोई भाषा औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी हो सकती है, पर जब कोई व्यक्ति केवल किसी विशेष धर्म, देश, वर्ग, प्रदेश से जुड़ी होने के कारण किसी भाषा का आग्रही, पक्षपाती हो जाता है, तो वह भाषा उसकी प्रगति में बाधक, कीचड़ की तरह धसाने वाली ही होने लगती है। तब भाषा, भाव, बोध का साधन न हो कर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर–विरोध का ही साधन बन कर रह जाती है। आज भारत में प्रायः यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार किसी एक भाषा का आग्रही बना कर विवाद पर विवाद को जन्म दिया जा रहा है। इसीलिए हम देखते हैं, कि कुछ किसी विशेष भाषा से जुड़कर उसी तक सीमित हो जाते हैं और तब जहाँ रहते हैं, जिन लोगों में बसते हैं, उनसे पूरी तरह घुल–मिल नहीं सकते इसके साथ वे अपनी प्रगति में भी बाधायें खड़ी कर लेते हैं।

अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्,
स्वल्पं तथायु र्बहवश्च विघ्नाः।
सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु,
हंसै र्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।

पंचतंत्र–कथामुख

जात–बिरादरी

मनुष्य एक विचारशील परस्पर अपेक्षी सामाजिक प्राणी है। वह माता–पिता के सहयोग से जन्म लेता है और परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों, पड़ोसियों रूपी समाज के सहयोग से फूलता–फलता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार, रिश्तेदारी, मित्रमण्डली से जुड़ा हुआ होता है और यही सामाजिकता है। इस सामाजिकता के बिना व्यक्ति जी नहीं सकता, पर जब व्यक्ति किसी विशेष जात–बिरादरी से जुड़ कर दूसरों को अलग तरह का या हल्का समझने लगता है और इस आधार पर उनसे घृणा, ईर्ष्या करता है, तो परस्पर द्वेष–कलह ही उपजता है। इसी के परिणामस्वरूप आज हिन्दु–मुस्लिम आदि के भिन्नता भरे भेद उभर आए हैं या कहीं काले–गोरे का सवाल खड़ा हो गया है। वस्तुतः हमारी स्थिति तो वही है–जैसे कि केले या प्याज के पात–पात में पात। ऐसे ही हमारी जात–जात में जात छिपी हुई है।

एक बार जब किसी के मन या व्यवहार में भेदभाव की भावना पनपती है, तो फिर यह कभी ब्राह्मण–अब्राह्मण का रंग ले लेती है तो कहीं शिया–सुन्नी, अहमदिया, मुजाहिर, कुर्द का रूप ले लेती है। इस प्रकार आज सर्वत्र अनेक बिरादरियों के रूप उभर आये हैं। फिर इन के आधार पर रोटी–बेटी के सम्बन्ध ऐसे सुदृढ़ हो जाते हैं कि इस से भिन्न की बात आने पर तूफान खड़े हो जाते हैं। एक देश में रहते, जीते हुए भी या एक धर्म, भाषा को अपना मानते हुए भी परस्पर विरोध बढ़ता चला जाता है। तब मानवता, एक धर्म, एक भाषा, एक देश की भावना भूल जाती है और बिरादरी के रूप में बटकर घृणा, ईर्ष्या, कलह ही व्यवहार में रह जाता है।

प्रदेश, ज्योतिष

प्रत्येक जन्म लेने वाला किसी न किसी स्थान पर किसी न किसी काल में जन्म लेता है, क्योंकि प्रत्येक क्रिया, चेष्टा, घटना का आधार स्थान और समय अवश्य होते हैं। जिस प्रदेश, देश में कोई जीता है, रहता है, वह वहाँ से प्राप्य जल, अन्न, वस्त्र आदि भोग्य वस्तुओं को वर्तता है। अतः इस अपनत्व के कारण अपने देश के प्रति प्रत्येक का एक कर्त्तव्य हो जाता है, कि वह उस के प्रति ईमानदार, सच्चा–सुच्चा हो। हाँ, इतने से ही दूसरों के प्रति घृणा, ईर्ष्या, द्वेष रखना कोई समझदारी की बात नहीं है। देश, प्रदेश की सीमायें, व्यवस्थायें तात्कालिक दृष्टि से बदलती रहती हैं अतः उस–उस के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनें, न कि देश, प्रदेश के मोह से घृणा, कलह को पालें या बढ़ायें।

इसके साथ दूसरी विशेष बात यह है कि अपने जन्म मात्र से या विशेष स्थल, काल होने से किसी को शुभ–अशुभ का फतवा देना कोई विज्ञान की बात नहीं है, कि इस ने अमुक स्थल पर अमुक घड़ी में जन्म लिया है। अतः प्रस्तुत ज्योतिष की योजना के अनुसार अमुक शुभ है और अमुक अशुभ है क्योंकि यह बात विज्ञान के कार्य–कारण के नियम से जँचती नहीं है।

ज्योतिष शब्द ज्योति से बनता है और ज्योति शब्द सूर्य, चन्द्र आदि के लिए आता है क्योंकि काल गणना सूर्य या चन्द्र से सम्बद्ध कर के उनकी गति, स्थिति (आकृति) चाल से चलती है। पर इसने अमुक राशि, नक्षत्र आदि में जन्म लिया है, इतने से कोई शुभ–अशुभ, शकुन–अपशकुन का पात्र नहीं हो जाता और न ही इससे ऐसा प्रसंग आ जाता है। हाँ, आज ज्योतिष को काल गणना में सीमित न करके शुभ–अशुभ के जाल में उलझा दिया गया है। पंचांग के तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण जैसे अंगों और ज्योतिष के सिद्धांत, होरा, संहिता, रमल, केरल, जातक आदि अनेक भेदों से सभी घटनाओं की शुभाशुभ स्थिति एक रूपता को प्रकट नही करती, अर्थात् इन सभी द्वारा किसी की एक जैसी स्थिति, फलादेश सामने नहीं आता। ज्योतिष को अधिकतर अब व्यापार बना कर कमाई ही इसका लक्ष्य बन गया है तभी तो महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है "(पूर्वपक्ष) तो क्या ज्योतिः शास्त्र झूठा है ? (उत्तरपक्ष) नहीं, जो उसमें अङ्क, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह सब झूठी है।" समुल्लास–2 पृष्ठ–33 (यहाँ सर्वत्र स्वा. वेदानन्द सम्पादित स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश द्वितीयावृत्ति की पृष्ठसंख्या हैं)

आज पूजे जाने वाले नवग्रहों में से चन्द्र, राहू, केतू ग्रह नहीं हैं, वैसे इनसे अतिरिक्त भी ग्रह हैं पर उनका फलादेश में कोई विचार नहीं करता।

ज्योतिष शास्त्रीय ग्रहों की गति, स्थिति, इनके प्राकृतिक नियम, प्रभाव, परिणाम सभी के लिए एक जैसे ही होते हैं। सूर्य की धूप सभी के लिए समान होती है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार उनका शुभ–अशुभ विवेचन कार्य–कारण व्यवस्था से जुड़ा हुआ नहीं है। इस बात का विश्लेषण करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने प्रश्न–उत्तर के रूप में इस प्रकार लिखा है –

> "(पोप जी)–ग्रहों का फल प्रत्यक्ष हो जाता है देखो धनाढ़य, दरिद्र, राजा, प्रजा, रंक, सुखी, दुःखी ग्रहों ही से होते हैं। (सत्यवादी) जो यह (सूर्यादि का) ग्रहण रूप प्रत्यक्ष फल है सो गणित विद्या का है फलित का नहीं। जो गणित विद्या है वह सच्ची और फलित विद्या स्वाभाविक सम्बन्ध–जन्य को छोड़ के झूठी है। जैसे अनुलोम, प्रतिलोम घूमने वाले पृथिवी और चन्द्र के गणित से स्पष्ट विदित होता है कि अमुक समय, अमुक देश, अमुक अवयव में सूर्य वा चन्द्र ग्रहण होगा।" 304–5

"जो धनाढ़य, दरिद्र, प्रजा, राजा, रंक होते हैं वे अपने कर्मों से होते हैं ग्रहों से नहीं। बहुत से ज्योतिषी लोग अपने लड़के लड़की का विवाह ग्रहों की गणित विद्या के अनुसार करते हैं पुनः उन में विरोध वा विधवा अथवा मृतस्त्रीक पुरुष हो जाता है। जो फल सच्चा होता तो ऐसा क्यों होता ? इसलिए कर्म की गति सच्ची और ग्रहों की गति सुख–दुःख भोग में कारण नहीं। भला ग्रह आकाश में और पृथिवी भी आकाश में बहुत दूरी पर है इनका सम्बन्ध कर्त्ता और कर्मों के साथ साक्षात् नहीं है।" 11, 305

इन ग्रहों से जोड़े जाने वाला फलादेश बिना किसी कारण के. अकस्मात्, संयोगमात्र होता है। उस शुभाशुभ का जन्मपत्र में दर्शाए गए ग्रहों का विशेष घर, स्थान में स्थित होने से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ऐसे ही विशेष समय में विशेष प्रकार के स्वप्नों का आना शारीरिक, मानसिक स्थिति से सम्बन्ध रखता है, अतः स्वप्नों को शुभ–अशुभ से जोड़कर भाग्य का निर्णय कोई तर्कयुक्त नहीं है।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गतांक से आगे...

('विश्व पर्यावरण दिवस' पर विशेष)

वेदों में पर्यावरण विज्ञान

● लेखक-स्वर्गीय डॉ. रामनाथ वेदालंकार

जलों के प्रकार—

वेदों में जल कई प्रकार के वर्णित किये गए हैं और उनके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वे सबके लिए प्रदूषणशामक एवं रोगशामक हों :

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः।
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः।।
शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेमिराभृताः।।

—अथर्व. 19.2.1—2

इन मन्त्रों में जलों के निम्नलिखित प्रकारों का उल्लेख हुआ हैः

1. **हिमालय के जल *(हेमवतीः आपः)***—ये हिमालय पर बर्फ—रूप में रहते हैं अथवा चट्टानों के बीच में बने कुंडों में भरे रहते हैं, अथवा पहाड़ी झरनों के रूप में झरते रहते हैं।
2. **स्रोतों के जल *(उत्स्याः आपः)***—ये पहाड़ी या मैदानी भूमि को फोड़कर चश्मों के रूप में निकलते हैं। कई चश्मों में गन्धक होता है, गन्धक का एक चश्मा देहरादून के समीप सहस्रधारा में है।
3. **सदा बहते रहनेवाले जल *(सनिष्यदाः आपः)***—ये सदा बहते रहने के कारण अधिक प्रदूषित नहीं हो पाते हैं।
4. **वर्षाजल *(वर्ष्याः आपः)***—वर्षा से मिलनेवाले जल शुद्ध तथा ओषधि—वनस्पतियों एवं प्राणियों को जीवन देनेवाले होते हैं। अथर्ववेद के प्राण—सूक्त (11.4.5) में कहा है कि जब वर्षा के द्वारा प्राण पृथिवी पर बरसता है तब सब प्राणी प्रमुदित होने लगते हैं।
5. **मरुस्थलों के जल *(धन्वन्याः आपः)***—मरुस्थलों की रेती में अभ्रक, लोहा आदि पाए जाते हैं, उनके सम्पर्क से वहाँ के जलों में भी ये पदार्थ विद्यमान होते हैं।
6. **आर्द्र प्रदेशों के जल *(अनूप्याः आपः)***—जहाँ जल की बहुतायत होती है वे प्रदेश अनूप कहलाते हैं, तथा उन प्रदेशों में होनेवाले जल अनूप्य। यहाँ के जल कृमि—दूषित भी हो सकते हैं।
7. **भूमि खोदकर प्राप्त किये जल *(खनित्रिमाः आपः)***—कुएँ, हाथ के नलों आदि के जल इस कोटि में आते हैं।
8. **घड़ों में रखे जल *(कुम्भेभिः आभृताः आपः)***—घड़े विभिन्न प्रकार की मिट्टी के तथा सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं के भी हो सकते हैं।

जल—शोधन—

जलों को प्रदूषित न होने देने तथा प्रदूषित जलों को शुद्ध करने के कुछ उपायों का संकेत भी वेदों में मिलता है।

यासु राजा वरुणो यासु सोमो
विश्वेदेवा यासूर्जं मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता
आपो देवीरिह मामवन्तु।।

—ऋ. 7.49.4

वे दिव्य जल हमारे लिए सुखदायक हों, जिनमें वरुण, सोम, विश्वेदेवाः तथा वैश्वानर अग्नि प्रविष्ट हैं।

यहाँ वरुण शुद्ध वायु या कोई जलशोधक गैस है, सोम चन्द्रमा या सोमलता है, विश्वेदेवाः सूर्यकिरणें हैं तथा वैश्वानर अग्नि सामान्य आग या विद्युत् है।

ऋग्वेद में लिखा है **"यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परिजायते विषम्। विश्वेदेवा निरितस्तत्सुवन्तु** अर्थात् यदि नदियों में विष उत्पन्न हो गया है तो सब विद्वान् जन मिलकर उसे दूर कर लें —ऋ. 7.50.3"।

3. भूमि

भूमि को वेद में माता कहा गया है **"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः**—अथर्व. 12.1.12", **"उपहूता पृथिवी माता**—यजु. 2.10"। वेद कहता है—

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे
अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो
उक्षतु वर्चसा।।

—अथर्व. 12.1.9

जिस भूमि की सेवा करनेवाली नदियाँ दिन—रात समान रूप से बिना प्रमाद के बहती रहती हैं वह भूरिधारा भूमिरुप गौ माता हमें अपना जलधार—रूप दूध सदा देती रहें।

भूमि की हिंसा न करें

वेद मनुष्य को प्रेरित करते हुए कहता है **"पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः** अर्थात् तू उत्कृष्ट खाद आदि के द्वारा भूमि को पोषक तत्त्व प्रदान कर, भूमि को दृढ़ कर, भूमि की हिंसा मत कर।" भूमि की हिंसा करने का अभिप्राय है उसके पोषक तत्वों को लगातार फसलों द्वारा इतना अधिक खींच लेना कि फिर वह उपजाऊ न रहे। भूमि पोषकतत्त्वविहीन न हो जाये एतदर्थ एक ही भूमि में बार—बार एक ही फसल को न लगाकर विभिन्न फसलों को अदल—बदलकर लगाना, उचित विधि से पुष्टिकर खाद देना आदि उपाय हैं। आजकल कई रासायनिक खाद ऐसे चल पड़े हैं, जो भूमि की उपजाऊ—शक्ति को चूस लेते हैं या भूमि की मिट्टी को दूषित कर देते हैं।

भूमि में या भूतल की मिट्टी में यदि कोई कमी आ जाये तो उस कमी को पूर्ण किये जाने की ओर भी वेद ने ध्यान दिलाया है **"यत्त ऊनं तत्त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य** —अथर्व. 12.1.61" अर्थात् प्रजापति राजा विभिन्न उपायों द्वारा उस कमी को पूरा करे। यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है **"सं ते वायुर्मातरिश्वा दधातु उत्तानाया हृदयं यद् विकस्तम्** —यजु. 11.39" अर्थात् उत्तान लेटी हुई भूमि का हृदय यदि क्षतिग्रस्त हो गया है तो मातरिश्वा वायु उसमें पुनः शक्ति—संधान कर दे। मातरिश्वा वायु का अर्थ है अंतरिक्षसंचारी पवन, जो जल, तेज आदि अन्य प्राकृतिक तत्त्वों का भी उपलक्षक है। परन्तु यदि जल, वायु आदि ही प्रदूषित हो गए हों तो उनसे भूमि की क्षति—पूर्ति कैसे हो सकेगी?

4. अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण—शोधन

वैदिक संस्कृति में अग्निहोत्र या यज्ञ का बहुत महत्त्व है। प्रत्येक गृहस्थ एवं वानप्रस्थ के करने योग्य पंच यज्ञों में अग्निहोत्र का भी स्थान है, जिसे देवयज्ञ कहा जाता है। अग्निहोत्र यज्ञाग्नि में शुद्ध घृत एवं सुगन्धित, वायुशोधक, रोगनिवारक पदार्थों की आहुति द्वारा सम्पन्न किया जाता है। एक अग्निहोत्र वह है जो धार्मिक विधि—विधानों के साथ मन्त्रपाठपूर्वक होता है, दूसरे उसे भी अग्निहोत्र कह सकते हैं जिसमें मन्त्रपाठ आदि न करके विशुद्ध वैज्ञानिक या चिकित्साशास्त्रीय दृष्टि से अग्नि में वायुशोधक या रोगकृमिनाशक पदार्थों का होम किया जाता है। **आयुर्वेद के चरक, बृहन्निघन्टुरत्नाकर, योगरत्नाकर, गदनिग्रह** आदि ग्रन्थों में ऐसे कई योग वर्णित हैं, जिनकी आहुति अग्नि में देने से वायुमण्डल शुद्ध होता है तथा श्वास द्वारा धूनी अन्दर लेने से रोग दूर होते हैं। वेद में अनेक स्थानों पर अग्नि को **पावक, अमीवचातन, पावकशोचिष्, सपत्नदंभन** आदि विशेषणों से विशेषित करके उसकी शोधकता प्रदर्शित की गई है। यज्ञ का फल चतुर्दिक् फैलता है **(यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा)**—यजु. 8.62। अग्निहोत्र ओषध का काम करता है **(अग्निष्कृणोतु भेषजम्)**—अथर्व. 6.106.3। अग्निहोत्र से शरीर की न्यूनता पूर्ण होती है **(अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण)**—यजु. 3.17। अग्नि वायुमण्डल से समस्त दूषक तत्त्वों का उन्मूलन करता है **(अग्निर्वृत्राणि दयते पुरुणि)** —ऋ. 10.80.2। वेद मनुष्यों को आदेश देता है **"आ जुहोता हविषा मर्जयध्वम्"** साम. 63 अर्थात् तुम अग्नि में शोधक द्रव्यों की आहुति देकर वायुमण्डल को शुद्ध करो"।

> **वैदिक संस्कृति में अग्निहोत्र या यज्ञ का बहुत महत्त्व है। प्रत्येक गृहस्थ एवं वानप्रस्थ के करने योग्य पंच यज्ञों में अग्निहोत्र का भी स्थान है, जिसे देवयज्ञ कहा जाता है। अग्निहोत्र यज्ञाग्नि में शुद्ध घृत एवं सुगन्धित, वायुशोधक, रोगनिवारक पदार्थों की आहुति द्वारा सम्पन्न किया जाता है। एक अग्निहोत्र वह है जो धार्मिक विधि-विधानों के साथ मन्त्रपाठपूर्वक होता है, दूसरे उसे भी अग्निहोत्र कह सकते हैं जिसमें मन्त्रपाठ आदि न करके विशुद्ध वैज्ञानिक या चिकित्साशास्त्रीय दृष्टि से अग्नि में वायुशोधक या रोगकृमिनाशक पदार्थों का होम किया जाता है।**

अग्निहोत्र की अवश्यकर्तव्यता की ओर संकेत करते हुए वेद कहते हैं—

स्वाहा यज्ञं कृणोतन ऋ. 1.13.12 अर्थात् स्वाहापूर्वक यज्ञ करो, **सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन** यजु. 3.2 अर्थात् सुसमिद्ध अग्निज्वाला पर पिघले घी की आहुति दो, **अग्निमिन्धीत मर्त्यः** साम. 82 अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह अग्नि प्रज्वलित करे, **सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत** अथर्व. 3.30.6 अर्थात् सब मिलकर अग्निहोत्र किया करो।

सायं सायं गृहपतिर्नो अग्निः
प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता।
प्रातः प्रातः गृहपतिर्नो अग्निः
सायं सायं सौमनसस्य दाता।।

—अथर्व. 19.55.3—4

अग्निहोत्र का समय सायं और

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

☞ पृष्ठ 06 का शेष

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

पर्यायेण हिदृश्यन्ते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः।
गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा–ग्रहाणां चरितं
स्वप्नोऽनिमित्तौत्पत्तिकं तथा।
फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति।।

वेणीसंहार 2, 14–15

अर्थात् सोते समय ऐसा स्वप्न इस समय आया, अतः उस का यह फल, परिणाम होगा। ऐसे ही आँधी, वर्षा, बाढ़, आग लगना आदि का व्यक्ति की ग्रह स्थिति, भाग्य से सम्बन्ध नहीं है। ये तो प्राकृतिक बातें हैं अतः समझदार को इस विवेचन के पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

सूर्य, चन्द्र आदि प्राकृतिक पदार्थ हैं, जिनकी व्यवस्थायें सभी के लिए एक सी, समान होती हैं। इन की प्रसन्नता, कोप का किसी पर प्रश्न नहीं उभरता। हाँ, व्यक्ति की सहनशक्ति में अन्तर प्रत्यक्ष बात है।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने लिखा है–

"जैसी यह पृथिवी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं ? जो क्रोधित होकर दुःख और शान्त होकर सुख दे सकें।" सत्यार्थ 2, 33

"सच तो यह है कि सूर्यादि लोक जड़ हैं। वे न किसी को दुःख और न सुख देने की चेष्टा कर सकते हैं।"

"हमें सूर्यादि ग्रहों की प्रसन्नता–अप्रसन्नता प्रत्यक्ष दिखलाओ। जिसको आठवाँ सूर्य चन्द्र और दूसरे को तीसरा हो दोनों को ज्येष्ठ महीने में बिना जूते पहिने तपी हुई भूमि पर चलाओ। जिस पर प्रसन्न हैं उनके पग, शरीर न जलने और जिस पर क्रोधित हैं उन के जल जाने चाहियें तथा पौष मास में दोनों को नंगे कर पौर्णमासी की रात्रि भर मैदान में रखें। एक को शीत लगे दूसरे को नहीं तो जानो कि ग्रह क्रूर और सौम्यदृष्टि वाले होते हैं।" 11, 304

फलित ज्योतिष के अनुसार बनाए जाने वाले जन्म पत्रों में बहुत सारों के नक्षत्र, ग्रह आदि लग्न एक से देखने में आते हैं पर उन व्यक्तियों के जीवन में बहुत अधिक अन्तर प्राप्त होता है।

बहवः संप्रदृश्यन्ते तुल्यनक्षत्रमंगलाः।
महत्तु फलवैषम्यं दृश्यते कर्म संगिषु।।

महाभारत वन (3) 200, 21

इसी बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है –"जो तुम ग्रहों का फल मानो तो इसका उत्तर देओ कि जिस क्षण में एक मनुष्य का जन्म होता है जिस को तुम ध्रवा त्रुटि मान कर जन्मपत्र बनाते हो, उसी समय में भूगोल पर दूसरे का जन्म होता वा नहीं ? जो कहो, नहीं, तो झूठ। और जो कहो होता है, तो एक चक्रवर्ती के सदृश भूगोल में दूसरा चक्रवर्ती राजा क्यों नहीं होता ? 11, 305

समाचारपत्रों में प्रायः ऐसे समाचार आते रहते हैं जैसे कि अगस्त 95 में कुरुक्षेत्र के ज्योतिषी नेत्रकुमार से सम्बन्धित घटनाचक्र से भी स्पष्ट होता है कि ज्योतिष के माध्यम से मंगलीक, कारोबार में हानि, रोग की आशंका, परिवार में किसी की मृत्यु की सम्भावना आदि का भय दिखा कर शोक में डूबोया जाता है और फिर तथाकथित अनिष्ट निवारण के उपाय के नाम पर दुकान को चमकाया जाता है। यह किसी एक व्यक्ति विशेष की बात नहीं है, प्रायः अधिकतम की यही स्थिति है। इन सबसे यही प्रमाणित होता है कि ज्योतिष का मुहूर्त विचार चिन्ताग्रस्त ही करता है और फिर अनिष्ट निवारण के उपायानुष्ठान के नाम पर धन ही बटोरा जाता है। यह कैसी विचित्र बात है कि एक ओर तो ज्योतिष की भविष्यवाणी को होनी, अटल कहा जाता है और दूसरी ओर अनिष्ट निवारक उपायों के अनुष्ठानों से होनी को टालने का विश्वास प्रदर्शित किया जाता है।

फलित ज्योतिष का ऐसा विचित्र उलझाव है, कि यदि कोई युवक इस पर विश्वास करे तो वह किसी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता। उसका अपनी इच्छा के अनुसार स्वतन्त्र कर्तृत्व समाप्त हो जाता है क्योंकि तब उस के सामने यही समस्या रहेगी कि आज अमुक दिशा में दिशाशूल के कारण नहीं जाना। आज अमुक वार, तिथि, ग्रह, राशि है अतः यह–यह कार्य नहीं करना। इन वर्जनाओं, मुहूर्तों में घिरा युवक अपनी तीव्र इच्छा की पूर्ति के लिए हर संघर्ष, स्पर्धा से पिछड़ जाएगा। आज के दौड़ भरे जीवन में मुहूर्तों के मिलान से जीवन का संघर्ष नहीं चलाया जा सकता।

क्रमशः

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001

☞ पृष्ठ 05 का शेष

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

भाग का अनुवाद और व्याख्या का कार्य भी किया था। **{आत्म–परिचय (युधिष्ठिर मीमांसक), पृष्ठ–153}**

3. ऋषि दयानन्द की पद प्रयोग शैली

ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य में पचासों ऐसे प्रयोग मिलते हैं, जिन्हें साम्प्रतिक वैयाकरण अशुद्ध मानते हैं। यजुर्वेद भाष्य पर कार्य करते हुए उक्त प्रकार के शब्दों को बिना शुद्धता दर्शाये वेदभाष्य को प्रकाशित करना मीमांसक जी ने उचित नहीं समझा। अतः आधुनिक वैयाकरणों द्वारा अशुद्ध माने जाने वाले शब्दों का वर्गीकरण करके पाणिनीय व्याकरण के अनुसार उनका साधुत्व दर्शाया गया। इस **'ऋषि दयानन्द की पद प्रयोग शैली'** के नाम से पुस्तक प्रकाशित की गई। प्रथम संस्करण 1960 ई., द्वितीय संस्करण 1995 ई.।

4. वेद–श्रुति–आम्नाय संज्ञा मीमांसा (द्वितीय संस्करण–2044 वि.सं.)।

5. वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन प्रकार–(द्वि.–तृ.–सं.–1985, 2009 ई.)

6. सामवेद के प्रथम मन्त्र का भाष्य

यह भाष्य 'टंकारा पत्रिका' (जुलाई–अगस्त 1961 ई.) में प्रकाशित हुआ। भाष्य के आरम्भ में मीमांसक जी ने 'आमुख' लिखकर अपनी भाष्यलेखनविषयक दृष्टि को स्पष्ट किया। भाष्य का क्रम इस प्रकार है–प्रथम मूल मन्त्र, पदपाठ, पदार्थ, अन्वय इसके बाद अधियज्ञपरक अर्थ, अधिदैवतपरक अर्थ तथा अध्यात्मपरक अर्थ देकर अन्त में भावार्थ के रूप में मन्त्र को स्पष्ट किया गया है।

7. वेदसुधा

इसमें मीमांसक जी द्वारा व्याख्यात कतिपय वेद मन्त्रों का संग्रह है– 1970 ई.।

8. अथर्ववेद संहिता का सम्पादन

'परोपकारिणी सभा अजमेर' में 1942 ई० से 1945 ई० तक कार्य करते हुए मीमांसक जी ने इस संहिता के षष्ठ संस्करण का सम्पादन किया। परोपकारिणी सभा से पूर्व मुद्रित संस्करणों में ऋषि, देवता और छन्द का निर्देश नहीं था। इनका संयोजन पहली बार किया गया।

9. सामवेद संहिता का सम्पादन

परोपकारिणी सभा के द्वारा ही प्रकाशित इस वेद के पूर्व संस्करणों में छपे ऋषि, देवता तथा छन्द आदि में जो भूलें थी उन्हें दूर कर इस षष्ठ संस्करण में मीमांसक जी द्वारा शुद्ध मुद्रित किया गया है।

मीमांसक जी ने इन दो संहिताओं के प्रकाशन के बाद ऋषि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य के कुछ अंशों का हस्तलेखों से मिलान करके शुद्ध मुद्रण हेतु प्रेस कॉपी तैयार कर मुद्रण कार्य प्रारम्भ किया। दो फार्म (16 पृष्ठ) ही छप पाये थे–उनमें कुछ स्थानों पर मीमांसक जी की टिप्पणियों को देखकर 'सभा' के मन्त्री श्री हरविलास शारदा ने इस कार्य को बन्द कर दिया। श्री शारदाजी की यह सोच थी कि ऋषि दयानन्द के जीवन काल में जो ग्रन्थ जैसा छपा है उसे वैसा ही छापा जाए। मीमांसक जी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में उनके लिपिकरों, प्रेस कर्मचारियों तथा अन्य कारणों से अशुद्ध पाठों को शुद्ध कर सुसम्पादित कर प्रकाशित करना चाहते थे। सो न हो सका। **{उसे देखकर ठीक करें, पृष्ठ–192–193}**

10. शिक्षा शास्त्र का इतिहास

पं. युधिष्ठिर मीमांसक के शिष्य डॉ. धर्मवीर विद्यावारिधि ने–I **वर्णोच्चारण शिक्षा चिन्तनम्, II शिक्षा–कल्प – आर्ष चिन्तनम्** – ये दो पुस्तकें सम्पादित तथा प्रकाशित की हैं। **{वर्णोच्चारण शिक्षा चिन्तनम् तथा शिक्षा कल्प आर्ष चिन्तनम् (डॉ. धर्मवीर विद्यावरिधि) में शिक्षा शास्त्र का इतिहास–लेखक पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–1–20। प्रकाशक–प्राच्यविद्या अनुसंधान केन्द्र पाणिनि धाम तिलोरा, पुष्कर क्षेत्र (अजमेर–राजस्थान) प्रथम संस्करण–2000 ई.}** इन दोनों पुस्तकों में नामानुरूप विषयों पर अनेक विद्वानों के लेख संकलित हैं। इन दोनों पुस्तकों में शिक्षा शास्त्र का इतिहास 20 पृष्ठों में मुद्रित है, जिनके लेखक श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी हैं। (प्रथम संस्करण – 2000 ई. प्रकाशक–प्राच्य विद्या अनुसंधान केन्द्र पाणिनि धाम, तिलोरा, पुष्कर क्षेत्र अजमेर–राजस्थान)।

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड,
अमेठी (उत्तर–प्रदेश)–227405

☞ पृष्ठ 04 का शेष

समाज की व्यवस्था

की कोशिश की गई। इस सब कार्य में उच्च वर्ण वालों ने बड़ी बाधाएँ डाली, पर आर्य डटे रहे।

{दलितोद्धार के लिए आर्यों ने असहय कष्ट सहे। भक्त फूलसिंह जी ने दलितों के लिए भूख हड़तालें कीं। वीर रामचन्द्र जी व वीर मेघराज ने प्राणोत्सर्ग करके अमर पद प्राप्त किया। 'जिज्ञासु'}

रामपदार्थ—आर्यसमाज ने यह बड़ी प्रशंसा का काम किया। पर काँग्रेसी कहते हैं कि महात्मा गांधी ने उनका उद्धार किया।

स्वामी जी—महात्मा गांधी से पचास बरस पहले आर्यसमाज ने यह काम आरम्भ किया था। महात्मा गांधी ने राजनैतिक कारणों से इसमें सहायता दी। अंग्रेज़ों की चाल थी कि हरिजनों को हिन्दुओं से अलग कर दिया जाये। महात्मा गांधी ने इनको रोकने के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इस प्रकार हरिजन हिन्दू जाति के भाग बने रहे। यह महात्मा गांधी की बहुत बड़ी सेवा थी। महात्मा गांधी जी ने आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाया।

ज्ञानचन्द्र—इतना होने पर भी लोग अब भी उनसे घृणा करते हैं।

स्वामी जी— यह सब धींगा—धींगी है। अब तो भारत स्वतन्त्र हो गया है। अब के राजनियम के अनुसार हम किसी को अछूत नहीं कह सकते। अछूतों को पूरा अधिकार है कि वे रेलगाड़ी में बैठें, होटल, बाज़ार, स्कूल, सभा, मन्दिर में घुस जायें। कोई उच्च वर्ण वाला यह नहीं कह सकता आप दूर हटिये, जो ऐसा करेगा उसको राजनियम के अनुसार दण्ड दिया जायेगा।

शिवदत्त—समाज में धार्मिक स्वतन्त्रता होनी चाहिये या नहीं ?

स्वामी जी—हर समाज में पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता होनी चाहिये। आज हम बैठे हुए धर्म के सिद्धान्तों पर निर्भीकता से विचार कर रहे हैं। यह सब भी स्वामी दयानन्द की कृपा का फल है। स्वामी जी से पूर्व धार्मिक सिद्धान्तों पर विचार करने की स्वतन्त्रता न थी। जो बताया गया चुपचाप मान लिया, जो पुस्तकों में पढ़ा उस पर आँख बन्द करके विश्वास कर लिया। "क्यों ? और कैसे?" कहा नहीं कि पाप लग गया। ऋषि दयानन्द ने हमें सिखाया है कि आँखें बन्द करके किसी बात को न मानो। उस पर विचार करो, युक्ति दो, यदि विचार और युक्ति से तुम्हारी समझ में आ जाये तो मान लो, नहीं तो ठुकरा दो।

शिवदत्त – सच्चाई वही है जो कसौटी पर कसी जा सके।

स्वामी जी—हाँ यही बात है। स्वामी दयानन्द ने व्याख्यान दिये। उन्होंने सनातनी हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों से शास्त्रार्थ किये। इस प्रकार जनता में धर्म के विषय में बड़ी जागृति हुई। बहुत से हिन्दू अपने धर्म को छोड़कर लोगों के बहकाने से ईसाई और मुसलमान हो जाते थे। आर्यसमाज ने इस बहती लहर को त्याग, तपस्या, और बलिदानों के द्वारा रोका। आर्यसमाज ने लोगों को बतलाया कि जिस प्रकार एक हिन्दू अपना धर्म बदल कर ईसाई या मुसलमान हो सकता है इसी प्रकार यदि मुसलमान या ईसाई वेदों पर ईमान लावे तो वह हिन्दू या वैदिक धर्मी हो सकता है। यह एक नई बात थी। एक हज़ार वर्ष से हिन्दू समाज ने अपने लालों को ठुकराकर विधर्मियों के हाथों में अर्पित कर दिया था। यदि किसी हिन्दू ने ग़लती से किसी मुसलमान का जूठा पानी या खाना खा लिया तो वह धर्म भ्रष्ट हो गया। उसका हिन्दू समाज में कोई स्थान नहीं। इस प्रकार लाखों की संख्या में हिन्दू मुसलमान हो गये थे। पर आर्यसमाज ने हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से न केवल रोका ही वरन् उसके साथ—साथ उनको शुद्ध भी किया।

मुसलमान लोग इस बात से बहुत चिढ़ गये। उन्होंने सोचा कि आर्यसमाजी कहने सुनने से न मानेंगे इसलिये इनको डंडे के जोर से शान्त करना चाहिये। **धर्मवीर पं. लेखराम आर्य मुसाफिर** आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता थे। मुसलमानों से शास्त्रार्थ किया करते थे। वे मुसलमानों को शुद्ध करते थे। एक धर्मान्ध मुसलमान शुद्ध होने के बहाने 6 मार्च 1897 ई. को आया। वह कम्बल के अन्दर कटार छिपा कर ले गया था। पण्डित जी उसकी मदद करने को तैयार थे। उसने मौका पाकर कटार प. लेखराम जी की छाती में मार दी। पण्डित जी का बलिदान हो गया। पर क्या उनके बलिदान होने से आर्यसमाज का कार्य रुक सकता था ? जो कई सौ लेखराम नहीं कर सकते थे वह उनके बलिदान ने कर दिया।

{स्मृति—दोष से उपाध्याय जी ने यह लिखा कि हत्यारा पण्डित जी के पास 6 मार्च को आया। तृतीय संस्करण में तो सन् 1857 छप गया। मैंने इस पुस्तक के पहली बार छपने पर ही उपाध्याय जी को लिखा था कि हत्यारा तो पण्डित जी के पास 16 फरवरी को ही पहुँच गया था। छाया के समान उनके संग लगा रहा। तब पूज्य गुरुदेव जी ने मुझे लिखा था कि अगले संस्करण में इस पुस्तक में आवश्यक संशोधन करके सब अशुद्धियाँ निकाल देना। 'जिज्ञासु'}

क्रमशः

प्रस्तुति : प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
'गंगा ज्ञान सागर भाग दूसरा' से साभार

☞ पृष्ठ 07 का शेष

वेदों में पर्यावरण ...

प्रातः है। सायं किया हुआ अग्निहोत्र प्रातःकाल तक वायुमण्डल को प्रभावित करता रहता है और प्रातः किये गए अग्निहोत्र का प्रभाव सायंकाल तक वायुमण्डल पर पड़ता है।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं
सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा
रुहेमा स्वस्तये।।

—यजु. 21.6

अग्निहोत्र ऐसी विशाल, दिव्य, दीप्तिमयी, निश्छिद्र, कल्याणदायिनी, अखण्डित, निश्चित रूप से आगे ले जानेवाली, विधिविधानरूप सुन्दर चप्पुओं वाली, निर्दोष, न चूनेवाली नौका है जो सदा यजमान की रक्षा ही करती है।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन
कल्पतां, चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां,
श्रोत्रंयज्ञेन कल्पतां, वाग् यज्ञेन कल्पतां,
मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पताम्।।

—यजु. 18.29

अग्निहोत्र—रूप यज्ञ से आयु बढ़ती है, प्राण सबल होता है, चक्षु सशक्त होती है, श्रोत्र और वाणी सामर्थ्ययुक्त होते हैं, मन और आत्मा बलवान् बनते हैं।

ऋग्वेद में कहा है— **सो अग्ने धत्ते सुवीर्यं स पुष्यति** —ऋ. 3.10.3 अर्थात् जो अग्निहोत्र करता है उसे सुवीर्य प्राप्त होता है, वह पुष्ट होता है।

5. आँधी, वर्षा और सूर्य द्वारा पर्यावरण—शोधन

प्राकृतिक रूप से आँधी, वर्षा और सूर्य द्वारा कुछ अंशों में स्वतः प्रदूषण—निवारण होता रहता है।

वातस्य नु महिमानं रथस्य
रुजन्नेति स्तनयन्नस्य घोषः।
दिविस्पृग् यात्यरुणानि कृण्वन्नुतो
एति पृथिव्या रेणुमस्यन्।।

—ऋ. 10.168.1

वायु—रथ की महिमा को देखो। यह बाधाओं को तोड़ता—फोड़ता हुआ चला आ रहा है। कैसा गरजता हुआ इसका घोष है! आकाश को छूता हुआ, दिक्प्रांतों को लाल करता हुआ, भूमि की धूल को उड़ाता हुआ वेग से जा रहा है।

मानसून पवन रूप मरुत् मेह बरसाते हैं – **वपन्ति मरुतो मिहम्** —ऋ. 8.7.4। ये वर्षा द्वारा प्रदूषण को दूर करते हैं।

आ पर्जन्यस्य वृष्ट्योदस्थामामृता वयम्।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा।।

—अथर्व. 3.31.1

बादल की वृष्टि से हम उत्कृष्ट स्थिति को पा लेते हैं, सब पेड़—पौधे, पर्वत, भूप्रदेश धुलकर स्वच्छ हो जाते हैं, रोग दूर हो जाते हैं, प्राणियों की आयु लम्बी हो जाती है।

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः।। —यजु. 19.43

प्रकृति में सूर्य भी प्रदूषण का निवारक है। वह अपने रश्मिजाल से तथा अपने द्वारा की जानेवाली वर्षा से पवित्रता प्रदान करता है।

येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो
जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना।
तेनास्मद्
विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामप
दुष्वप्न्यं सुव।।

—ऋ. 10.37.4

सूर्य अपनी ज्योति से अन्धकार को बाँधता है, समस्त अन्नाभाव को, अन्नाहुति को, रोग को और दुःस्वप्न को दूर करता है।

वेद में कहा है "**सा घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरि** —अथर्व. 6.1.3" अर्थात् सूर्य अमृत बरसाता है, "**सूर्य यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः** — अथर्व. 2.21.1" अर्थात् हे सूर्य, जो तेरा ताप है उससे तू उसे तपा डाल जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं।

अंत में उपसंहार—रूप में हम कह सकते हैं कि वायु, जल, भूमि, आकाश, अन्न आदि पर्यावरण के सभी पदार्थों की शुद्धि के लिए वेद भगवन् हमें जागरूक करते हैं तथा आई हुई अस्वच्छता को दूर करने का आदेश देते हैं। पर्यावरण की शुद्धि के लिए वेद भगवन् वनस्पति उगाना, अग्निहोत्र करना, विद्युत्, अग्नि, सूर्य एवं ओषधियों का उपयोग करना आदि उपायों को सुझाते हैं।

।। आओ लौटें वेदों की ओर।।

'आर्ष ज्योतिः' से साभार
प्रस्तुति डॉ. विवेक आर्य

पत्र/कविता

सिसकते देखा है

बौनों को अम्बर के लिए उछलते देखा है।
अटल, अचल को हमने खूब टहलते देखा है।
हमने उठना भी देखा है, गिरना भी देखा,
गिरे हुए को हमने पुनः सँभलते देखा है।
हर सुविधा थी दासी जिनकी, हर सुख था नौकर,
उनको अपने हाथों पंखा झलते देखा है।
बिकते हुए राम–सीता को कभी नहीं देखा,
किसने वाशिष्ठों को रोज फिसलते देखा है।
गर्व शमां पर जलने का क्यों करता परवाना,
बिना आग लोगों को हमने जलते देखा है।
जिनकी वक्र दृष्टि से जल जाता था उपवन तक,
उनके सिर से अक्सर ताज बदलते देखा है।
फूँक – फूँक पग रखते जो औरों पर हँसते थे,
उनको गैरों के साँचों में ढलते देखा है।
क्यों देते हो दोष साँप को मर्यादा बदली,
चन्दन तक को हमने जहर उगलते देखा है।
एक 'मनीषी' क्या कितने अंधे हो गए यहाँ,
भारत माँ को हमने खूब सिसकते देखा है।

प्रो. डॉ सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डी–801, बैस्टेक पार्क व्यू संस्कृति एपार्टमेंट,
सैक्टर –92, नया गुरुग्राम हरियाणा–122505
मो. 9810835335

सुनीति चौधरी

क्रान्ति के इतिहास में वर्ष 1931 काफी निराशा व धुंध भरा रहा। 27 फरवरी को क्रान्ति के पुरोधा चन्द्रशेखर आज़ाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से मुकाबला करते हुये शहीद हो गये। स्वतंत्रता की आशा मन में संजोये देशवासियों के आँसू सूख भी नहीं पाये थे, क्रूर ब्रितानी हुकूमत ने समस्त कायदे कानूनों को ताक में रखते हुये 23 मार्च को सायं 7.15 बजे भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी। यही नहीं उनकी पार्थिव देह जन विद्रोह की डर से उनके परिजनों को न सौंपकर रात्रि में हुसैनीवाला में तेल छिड़क कर अग्नि के हवाले कर दीं। सारा देश इस समाचार से स्तब्ध ! चारों ओर एक घुटन भरी खामोशी! लेकिन इसी वातावरण में जन्मी विश्व की सबसे कम आयु की क्रान्तिकारी 'सुनीति चौधरी'।

सुनीति चौधरी ने बंगाल में आतंक का पर्याय बने कलैक्टर स्टीवेन्स (Charles Geoffrey Buckland Stevens) को 24 दिसम्बर 1931 को स्फूर्ति व निपुणता से सटीक निशाना लगाकर गोली मारी, वह वहीं ढेर हो गया। गोलियों की आवाज़ सुनकर सुरक्षाकर्मी दौड़े आये। सुनीति अपनी सहेली शान्तिघोष के साथ शान्त खड़ी रही, दोनों वीरांगनाओं को गिरफ्तार कर लिया।

{1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् यह पहली घटना थी जब एक नाबालिग लड़की ने देश की आज़ादी के लिए शस्त्र उठाये। सुनीति ने नारी–शक्ति को न केवल पुनर्जागृत किया, बल्कि अंग्रेज़ों को बता दिया कि भारत की बेटियाँ शस्त्र उठाने व बलिदान देने में पीछे नहीं हैं। 12 जनवरी (1934) मास्टर दा को फांसी के फंदे पर सुलाया। –सम्पादक}

श्रीमती सुरुसुन्दरी तथा उमा चरण चौधरी के दाम्पत्य जीवन में सुनीति चौधरी का जन्म 12 जनवरी 1917 में कोमिला वर्तमान (बांग्लादेश) में हुआ। पढ़ाई में बचपन से ही लग्नशील सुनीति का मन नवाब फैजुनिशां राजकीय गर्ल्स हाईस्कूल, कोमिला में शिक्षा प्राप्त करते हुए देश की आजादी के लिए संघर्षरत क्रान्तिकारियों की ओर मुड़ता गया। वह छात्र संघ की नेता प्रफुल्ल नलिनी के सम्पर्क में आईं और गुप्त रूप से क्रान्ति को समर्पित हो गईं। वीरेन भट्टाचार्य व अखिल चन्द्र नंदी ने मेला भाती की पहाड़ियों में उन्हें पिस्तौल चलाने की ट्रेनिंग दी तथा सुनीति प्रवीण निशानेबाज बन गईं। ब्रिटिश तेजतर्रार सी.आई.डी. को इसकी भनक भी न लग सकी।

न्याय का नाटक किया गया। स्टीवेन्स के निकट खड़े एस.डी.ओ. ने गवाही दी थी। होना वही था, लेकिन सुनीति की आयु उस समय 14 वर्ष जबकि शान्ति 15 वर्ष की थी; इसलिए दोनों को आजीवन कारावास का दण्ड मिला वह भी कुख्यात 'कालापानी' में। दोनों को जेल में भी प्रताड़ित किया गया। सैकिन्ड क्लास की जगह थर्ड श्रेणी में रखा गया, पर दोनों ने माफीनामा कभी नहीं दिया। केन्द्र में कांग्रेस की सरकार आने पर अण्डमान में सजा काट रहे क्रान्तिकारियों की रिहाई सम्भव हुई। सुनीति चौधरी 1939 में सैल्यूलर के सीखचों से बाहर खुले वातावरण में आईं तो अपनी पढ़ाई में जुट गईं।

1947 में एम.बी.बी.एस. करने के पश्चात् उन्होंने स्वयं को गरीबों की सेवा में समर्पित कर दिया। प्रद्योत कुमार घोष के साथ विवाह–बन्धन में बंध गईं। उन्हें विधानसभा चुनाव लड़ने का ऑफर भी मिला लेकिन अपने चिकित्सा व्यवसाय से सेवा में लगी रहीं और लोगों की हो गईं **'श्री माँ'**।

स्वामी गुरुकुलानन्द 'कच्चाहारी'
भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य और स्वतन्त्रता संग्राम से साभार

****

आम फलों का राजा

आम (Mango) दुनिया भर में सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले फलों में से एक है। रसीला, मीठा और खुशबूदार होने के कारण इसे "फलों का राजा" भी कहा जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम मैंगिफेरा इंडिका (Mangifera indica) है। आम के बारे में मुख्य बातें और तथ्य यहाँ दिए गए हैं–

1. इतिहास और उत्पत्ति–आम की उत्पत्ति हज़ारों वर्ष पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप (विशेषकर भारत, बांग्लादेश और म्यांमार) के उत्तर–पूर्वी हिस्से में हुई थी। भारत, पाकिस्तान और फिलीपींस का यह राष्ट्रीय फल है।

2. प्रमुख किस्में–दुनिया भर में आम की सैकड़ों किस्में पाई जाती हैं। भारत में इसकी कुछ सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय किस्में निम्नलिखित हैं : **अल्फांसो** (हापुस) महाराष्ट्र में पैदा होने वाला यह आम अपनी मिठास और बेहतरीन स्वाद के लिए दुनिया भर में मशहूर है। **दशहरी** : उत्तर प्रदेश (विशेषकर लखनऊ के पास दशहरी गाँव) में पैदा होने वाला यह आम बेहद मीठा और सुगंधित होता है। **चौसा** : यह आम अपने रसीलेपन और मिठास के लिए बहुत पसंद किया जाता है। **लंगड़ा** और **सफेदारू** उत्तर और पूर्वी भारत में पाए जाने वाले अत्यधिक लोकप्रिय आम हैं।

3. पोषक तत्व–आम केवल स्वाद में ही बेहतरीन नहीं होता, बल्कि यह सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। इसमें कई ज़रूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं : **विटामिन ए और सी**–आँखों की रोशनी और त्वचा के लिए बहुत अच्छे होते हैं। **आयरन और पोटेशियम** : शरीर में रक्त की कमी दूर करते हैं और रक्तचाप को नियंत्रित रखते हैं। **एंटीऑक्सीडेंट्स** : रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) को मजबूत बनाते हैं।

4. स्वास्थ्य लाभ–पाचन शक्ति : इसमें मौजूद फाइबर और पाचक एंजाइम पेट को स्वस्थ रखते हैं। **तुरंत ऊर्जा** : इसमें मौजूद प्राकृतिक शर्करा (Natural Sugar) बिना किसी नुकसान के तुरंत ऊर्जा देती है। **त्वचा में चमक** : आम का नियमित सेवन चेहरे की चमक बढ़ाता है और त्वचा को नरम रखता है।

5. आम से बनने वाले व्यंजन–आम का इस्तेमाल सिर्फ फल के रूप में ही नहीं, बल्कि कई अन्य स्वादिष्ट व्यंजनों को बनाने के लिए भी किया जाता है। **मैंगो शेक और स्मूदी** : गर्मियों में आम का शेक बहुत चाव से पिया जाता है। **आम पापड़ और अचार** : कच्चे आम (कैरी) का उपयोग चटपटे अचार और मीठे आम पापड़ बनाने के लिए किया जाता है। **मैंगो आइसक्रीम** : बच्चों से लेकर बड़ों तक, मैंगो आइसक्रीम बेहद लोकप्रिय है।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल अमृतसर में 12वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी इंटरनैशनल स्कूल अमृतसर में 12वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। विद्यार्थियों के लिए ध्यान सत्र आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने आत्मिक शांति एवं आत्म–जागरूकता का अनुभव किया।

योग के महत्व के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने हेतु निबंध लेखन, भाषण, प्रश्नोत्तरी, ई–पोस्टर निर्माण तथा पोस्टर निर्माण जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 1100 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विभिन्न योगासनों का अभ्यास कर मन, शरीर एवं आत्मा के समन्वय का संदेश दिया।

अपने संबोधन में प्रिंसिपल डॉ. अंजना गुप्ता ने वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन–पद्धति है, जो मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन, आत्म–अनुशासन एवं संपूर्ण स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।

यह आयोजन भारत की गौरवशाली योग परंपरा का स्मरण कराते हुए सभी को संतुलित, स्वस्थ एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन अपनाने की प्रेरणा प्रदान करने में सफल रहा।

डी.ए.वी. पुणे ने मनाया स्थापना दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुणे में डी.ए.वी. स्थापना दिवस के अवसर पर हवन का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्या श्रीमती जयश्री खांडेकर के साथ सभी शिक्षकों और कार्यालयी कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया व उस आंदोलन का उत्सव मनाया जिसने भारत में आधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक मूल्यों को जोड़ा। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुणे के शिक्षकों ने यह प्रण लिया कि वे "ज्ञान, कर्म और भक्ति" के मार्ग पर चलते हुए बच्चों का भविष्य बनाएंगे।

श्रीमती खांडेकर ने अपने संबोधन में डी.ए.वी. की स्थापना के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए इस आन्दोलन को आरम्भ करने की कारणों और तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा 1000 संस्थाओं की वर्तमान श्रंखला आज विश्व में गैर सरकारी शिक्षा संस्थाओं की शिरोमणि है। प्रत्येक विद्यार्थी को इस 140 वर्ष पुरानी संस्था का हिस्सा बनने पर गौरव का अनुभव करना चाहिए।

उन्होंने कहा महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक अंग्रेज़ी शिक्षा के साथ वैदिक संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समन्वय करना ही हमारा लक्ष्य है।

एस.एम.वी. जालन्धर में अन्तर्राष्ट्रीय योग-दिवस

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि, उपसभा, पंजाब के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय योग–दिवस पूर्णोत्साह से मनाया गया। इस वर्ष की थीम 'स्वस्थ वृद्धावस्था हेतु योग' रही।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब श्री जे.पी. शूर जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

योग प्रशिक्षक श्री सिमरनहरी सिदाना द्वारा विभिन्न 'योगासन' और 'प्राणायाम' का अभ्यास करवाया गया। प्राचार्या ने कहा कि नियमित योगाभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है तथा व्यक्ति स्वस्थ, संतुलित एवं तनावमुक्त जीवन व्यतीत कर सकता है।

छात्राओं ने फिटनैस डांस तथा

विभिन्न प्रकार की योग मुद्राओं की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर श्री अजय गोस्वामी जी, श्री कुन्दन लाल अग्रवाल जी, एच.एम.वी. एल्युमनी सदस्य तथा अन्य माननीय सदस्य भी मौजूद रहे। श्रीमती एकता खोसला ने योग गुरु एवम् आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री जे.पी. शूर ने कहा योग को अपनाकर लोगों ने अपनी बड़ी–बड़ी बीमारियों का ईलाज किया है साथ ही उन्होंने सभी को योग को अपने जीव का अभिन्न अंग बनाने की शपथ भी दिलवाई।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

डी.ए.वी. दुर्गापुर द्वारा 12वें अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस का आयोजन

आर्य युवा समाज डीएवी मॉडल स्कूल, दुर्गापुर द्वारा 21 जून 2026 (रविवार) को 12वें अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस का आयोजन किया गया। इस योगदिवस का मुख्य विषय *'स्वस्थ दीर्घायु के लिए योग'* था।

300 छात्र–छात्राओं ने और विद्यालय के लगभग 200 शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं सहकर्मियों ने अभिभावकों के साथ मिलकर योग का अभ्यास किया।

प्राचार्या पापिया मुखर्जी ने योग का महत्त्व समझाते बताया कि आज के समय में योग की आवश्यकता और बढ़ जाती है जब इस भाग–दौड के जीवन में मानसिक तनाव से मनुष्य ग्रस्त रहता है। मानसिक तनाव को दूर करने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम ही योगाभ्यास है।

विद्यालय की संगीत शिक्षिका श्रावणी मंडल एवं सृजा घोष महोदया ने योग पर आधारित मनमोहक गीत का सस्वर गायन भी किया गया।

शिक्षिका शर्मिष्ठा चट्टर्जी ने ताड़ासन, पश्चिमोत्तानासन, हस्तपादासन, भुजङ्गासन, शलभासन, अर्धचक्रासन इत्यादि सरल आसनों का अभ्यास करवाया। कपालभाति, अनुलोमविलोम, शीतली, आदि प्राणायाम का अभ्यास भी करवाया गया। अंत में ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास भी किया।

प्राचार्या ने विद्यालय परिसर में प्रतिदिन सायंकालीन वेला में 5:00 बजे से 6:00 बजे तक योग संगम सत्र (योगाभ्यास सत्र) प्रारम्भ करने की घोषणा की। उन्होंने सामूहिक रूप से इस योग कक्षा से जुड़कर स्वास्थ लाभ प्राप्त करने का आह्वान भी किया। अभिभावकों ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. सेक्टर-15-ए, चण्डीगढ़ में 12वाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सेक्टर–15–ए, चण्डीगढ़ में दिनांक 21 जून, 2026 को 12वाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस–2026 अत्यन्त उत्साह एवं गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया।

इस कार्यक्रम में 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्राचार्या, अध्यापकगण एवं समस्त सहकर्मियों ने भी योगाभ्यास किया।

योग प्रशिक्षक द्वारा विद्यार्थियों एवं उपस्थित सभी सदस्यों को विभिन्न योगासन, व्यायाम, प्राणायाम एवं यौगिक सूक्ष्म प्राणायाम का अभ्यास करवाया गया एवं योगाभ्यास के महत्व को भी समझाया गया।

कार्यक्रम में योग के नियमित अभ्यास से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, अनुशासन, एकाग्रता एवं संतुलन बनाए रखने का संदेश दिया गया। विद्यालय परिवार ने संकल्प लिया कि योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाकर स्वस्थ एवं समृद्ध समाज के निर्माण में योगदान दिया जाएगा।

प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा ने सभी विद्यार्थियों को साधुवाद प्रदान किया तथा कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आयोजकों एवं सहयोगी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

डी.ए.वी. राजगढ़ (हि.प्र.) ने मनाया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी. सेंटेनरी महात्मा आनंद स्वामी पब्लिक स्कूल, राजगढ़ में 21 जून 2026 को 12वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूर्ण श्रद्धा, उल्लास और अनुशासन के साथ मनाया गया। समूचा विद्यालय प्रांगण योगमय हो उठा जब आचार्य नरेश जी ने ओंकार के पावन उच्चारण के बीच विद्यार्थियों को ताड़ासन, वृक्षासन सहित विभिन्न योगासनों का अभ्यास करवाया। उन्होंने प्राणायामों का अभ्यास करवाकर विद्यार्थियों को श्वास नियंत्रण और मानसिक शांति का सूत्र भी समझाया।

प्रधानाचार्य श्री चंद्रेश्वर शर्मा ने कहा कि "योग शरीर को स्वस्थ रखने की कला ही नहीं, मन को एकाग्र और आत्मा को जाग्रत करने का विज्ञान है। जो विद्यार्थी प्रतिदिन योग को अपनी दिनचर्या में स्थान देते हैं, वे न केवल स्वस्थ रहते हैं बल्कि जीवन की हर चुनौती का सामना आत्मविश्वास से करते हैं। योग ही सच्ची शिक्षा और सुदृढ़ चरित्र निर्माण का आधार है।"

अंत में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प लिया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**